4

पाप के दोष पर विजय पाना

समाचार पत्र का एक कौमिक जो मुझे अच्छा लगता है उसे ''जन्म से पराजित।'' मुझे इसलिए अच्छा लगता है क्योंकि मैं मुख्य पात्र के साथ सहानुभूति रख सकता हूं। मैं कई बार अपने आपको ''जन्म से पराजित'' जैसा महसूस करता हूं। गलत होता है, सफलता हाथ से निकल जाती है और परेशानियां खड़ी होती हैं। कई बार मैं हैरान होता हूं कि ''क्या मैं कभी जीत सकता हूं?''

मेरे और दूसरों के लिए जो कई बार अपने आपको हारे हुए मानते हैं अच्छी खबर यह है कि विजय सम्भव है। पौलुस की तरह हम कह सकते हैं कि मसीह के द्वारा हम ''विजय पाने वालों से बढ़कर हैं'' (रोमियों 8:37; RSV)। प्रेरित यूहन्ना ने अपनी पहली पत्री में 5:4, 5 में इसकी गवाही दी:

> क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है।
>
> संसार पर जय पाने वाला कौन है? केवल वह जिसका यह विश्वास है, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

हम ''संसार पर जय प्राप्त'' कर सकते हैं! 1 यूहन्ना 2:15-17 में संसार को पाप से मिलाया गया है इसलिए यूहन्ना कह रहा था कि हम पाप पर विजय पा सकते हैं। 1 यूहन्ना का अच्छा संदेश और पुस्तक के विषयों में से एक यह है कि मसीही लोगों के लिए ''पाप पर जय'' पाने का अनुभव सम्भव है।

मसीह के द्वारा हम पाप के दोष पर विजय पा सकते हैं। बाइबल हर जगह सिखाती है कि जब हम पाप करते और परमेश्वर की नज़र में दोष बन जाते हैं तो हम उसे दुख देते हैं। हमारा पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है (यशायाह 59:1, 2; देखें इफिसियों 2:12)। परन्तु बाइबल यही बताती है कि मसीह और उसके बलिदान के द्वारा, हमारे पिछले पाप क्षमा किए जा सकते हैं। यह सिखाती है कि जब मसीही लोग पाप करते हैं तो उन पापों को भी क्षमा किया जा सकता है।

पिछले पापों का दोष

1 यूहन्ना 3:5 में हमें बताया गया है कि ''वह इसलिए प्रगट हुआ कि पापों को हर ले जाए।'' 3:16 में हम पढ़ते हैं कि यीशु ने ''हमारे लिए अपने प्राण दे दिए।'' परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में भेजा ''कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं,'' क्योंकि वह ''हमारे पापों का प्रायश्चित्त'' और ''जगत का उद्धारकर्त्ता'' है (1 यूहन्ना 4:9, 10, 14)। यूहन्ना ने कहा कि यीशु ''हमारे पापों का प्रायश्चित'' बना (1 यूहन्ना 2:2)। जिस कारण हम बिना किसी संदेह के जानते हैं कि हमारे ''पाप क्षमा हुए हैं'' (1 यूहन्ना 2:12)।

इसलिए मसीही होने के नाते हमें विश्वास से परमेश्वर की संतान बनने पर उसके अनुग्रह के द्वारा हमारे पाप क्षमा किए गए थे (1 यूहन्ना 5:1)। क्षमा किए जाने के लिए विश्वास सबसे पहली और सबसे बुनियादी ज़रूरत है। यूहन्ना ने कहा, ''संसार पर जय पाने वाला कौन है? केवल वह विश्वास'' (देखें 1 यूहन्ना 5:5क)।

बेशक यीशु के ईश्वरीय होने के विचार को स्वीकार करने के अर्थ में विश्वास परमेश्वर की संतान बनाने वाला ही नहीं है। पापों की क्षमा तो व्यक्ति पापी के यीशु को परमेश्वर मानने से अपने पापों से मन फिराने और मसीह में बपतिस्मा लेकर प्रभु की आज्ञा मानने तक ले जाती है (प्रेरितों 2:38)। केवल तभी उसे सचमुच का पिछले पापों के दोष पर विजय का आनन्द मिल सकता है।

वर्तमान के पापों का दोष

पिछले पापों के दोष पर जय दिलाने के अलावा यीशु उन लोगों को जो उसके चेले हैं उनके वर्तमान के पापों पर भी जय दिलाता है। यदि हम पाप करते हैं तो पिता के पास हमारा एक सहायक है। अर्थात धर्मी यीशु मसीह (1 यूहन्ना 2:1)। इसके अलावा ''यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, ... उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है'' (1 यूहन्ना 1:7) और जब हम ''अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है'' (1 यूहन्ना 1:9)।

हम जो मसीही लोग हैं हमें यह विश्वास करने की आवश्यकता है कि अपने लहू के द्वारा यीशु हमारे पाप को क्षमा करता है। यदि हम मन फिरा लें और अपने पाप को मान लें पर फिर भी दोषी महसूस कर रहे हों, तो हम यह दिखाते हैं कि हम परमेश्वर की क्षमता या इच्छा पर वह करने पर संदेह कर रहे हैं जो उसने कहा है कि वह करेगा। क्षमा मांगने के बाद हमें पछतावे से मुंह लटकाने की आवश्यकता नहीं। मसीही लोग पाप के दोष पर विजय पाते रह सकते हैं!

सारांश

यीशु हमारे लिए पाप पर विजय पाने का ढंग उपलब्ध कराने के लिए आया। उसने इस ढंग को अपने ही लहू से खरीदा और उसकी कीमत चुकाई। उसका बड़ा उद्धार सुसमाचार के आज्ञापालन और ज्योति में चलने के द्वारा उसके पास आने वाले हर व्यक्ति के लिए एक वास्तविकता है।